



मनोबुद्ध्यहङ्कार चित्तानि नाहं
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे ।
न च व्योम भूमिर्न तेजो न वायुः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

मैं न तो मन हूँ, न बुद्धि हूँ, न अहंकार हूँ, न ही चित्त हूँ
मैं न तो कान हूँ, न जीभ हूँ, न नासिका हूँ, न ही नेत्र हूँ
मैं न तो आकाश हूँ, न धरती हूँ, न अग्नि हूँ और न ही वायु हूँ
मैं तो शुद्ध चेतना हूँ, अनादि, अनंत शिव हूँ।

न च प्राणसंज्ञो न वै पंचवायुः,
न वा सप्तधातुः न वा पञ्चकोशः ।
न वाक्पाणिपादौ न चोपस्थपायु,
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

मैं न तो प्राण हूँ और न ही पंच वायु हूँ,
मैं न सात धातु हूँ, और न ही पांच कोश हूँ
मैं न वाणी हूँ, न पैर हूँ, न हाथ हूँ, न ही उत्सर्जन की इन्द्रियां हूँ
मैं तो शुद्ध चेतना हूँ, अनादि, अनंत शिव हूँ।

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ,
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः ।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः,
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

न मुझमे घृणा है, न ही लगाव है, न मुझे लोभ है और न ही मोह
न मुझे अभिमान है और न ही ईर्ष्या
मैं धर्म, धन, काम एवं मोक्ष से परे हूँ
मैं तो शुद्ध चेतना हूँ, अनादि, अनंत शिव हूँ।

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं,
न मन्त्रो न तीर्थो न वेदा न यज्ञ ।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता,
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

मैं पुण्य, पाप, सुख और से भिन्न हूँ
मैं न मंत्र हूँ, न ही तीर्थ हूँ, न ज्ञान हूँ और न ही यज्ञ हूँ
न मैं भोगने की वस्तु हूँ, और न ही भोक्ता हूँ
मैं तो शुद्ध चेतना हूँ, अनादि, अनंत शिव हूँ।

न मे मृत्युशंका न मे जातिभेदः,
पिता नैव मे नैव माता न जन्मः ।
न बन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्यः,
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ 5 ॥

मुझे न तो मृत्यु का भय है, न ही किसी जाती से भेदभाव है
मेरा न तो कोई पिता है और न ही माता, न ही मैं कभी जन्मा
मेरा न तो कोई भाई है, न मित्र, न शिष्य और न ही गुरु
मैं तो शुद्ध चेतना हूँ, अनादि, अनंत शिव हूँ।

अहं निर्विकल्पो निराकार रूपो,
विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम् ।
न चासङ्गतं नैव मुक्तिर्न मेयः,
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ 6 ॥

मैं निर्विकल्प हूँ, मैं निराकार हूँ
मैं चैतन्य के रूप में प्रत्येक स्थान पर व्याप्त हूँ, सभी इन्द्रियों में मैं हूँ
मुझे न किसी चीज़ में आसक्ति है और न ही मैं उससे मुक्त हूँ
मैं तो शुद्ध चेतना हूँ, अनादि, अनंत शिव हूँ।